क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 02 अंक: 77, गुरुवार, 11 अप्रैल, 2019, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

पांच साल में चायवाले से चौकीदार बन गए पीएम मोदीः ममता बनर्जी

नई दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से बाहर किया जायेगा और यह सुनिश्चित किया जाएगा कि नरेन्द्र मोदी फिर कभी देश के प्रधानमंत्री नहीं बनें। बनर्जी ने दावा किया कि तृणमूल कांग्रेस केन्द्र में अगली सरकार बनाने में मदद करेगी। उन्होंने लोगों से तृणमूल कांग्रेस को वोट देने का आग्रह किया। ममता ने उत्तर दिनाजपुर के चोपड़ा में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा, ''इस बार बहुत ही महत्वपूर्ण चुनाव है। यह चुनाव भाजपा को हराने के लिए है। भाजपा को सत्ता से हटाने का अभियान है... यह चुनाव इस बात को सुनिश्चित करने के लिए है कि नरेंद्र मोदी फिर कभी देश के प्रधानमंत्री नहीं बनें। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह (भाजपा) कभी सत्ता में वापसी नहीं करें।'' बनर्जी ने कहा, ''तृणमूल कांग्रेस अगली सरकार बनाने में मदद करेगी। हमारी पार्टी भाजपा को देश से खदेड़ेगी।'' मोदी पर तंज करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े चार वर्षों तक प्रधानमंत्री विदेश यात्रा करने में व्यस्त रहे। ''अचानक वह देशवासियों के कल्याण के बारे में इतना सचेत हो गए।'' ममता ने कहा, ''पांच वर्ष पहले वह चायवाला थे और अब वह अचानक चौकीदार हो गए है। चुनावों के बाद लोग उन्हें कहीं और पाएंगे। साढ़े चार वर्षों तक वह दुनिया की यात्रा करने में व्यस्त रहे और अब यहां रोजगार नहीं है, किसान अपना कर्ज नहीं चुका पाने के कारण मर रहे हैं। जब लोगों की पीट-पीट कर हत्या की जा रही थी तो वह मौन थे। मैं उन्हें (मोदी) दंगाबाज और लुटेरा कहती हूं।'' बनर्जी ने कहा कि न तो भाजपा, कांग्रेस से और न ही माकपा से कोई पिछले पांच वर्षों में दार्जिलिंग आया है जबकि वह लगभग हर महीने इस पहाड़ी क्षेत्र में आती हैं।

पहले चरण की हैं 15 सीटें, जहां की जनता सांसदों को दोबारा नहीं देती मौका

नई दिल्ली । लोकसभा के पहले चरण के लिए चुनाव प्रचार थम चुका है। इस चरण में 20 राज्यों की कुल 91 सीटों के लिए 11 अप्रैल को वोट डाले जाने हैं। इस चरण को लेकर एक दिलचस्प बात सामने आई है कि इनमें से 8 राज्यों की 15 सीटें ऐसी हैं, जहां की जनता कभी सांसद को दोबारा मौका नहीं देती है और हर बार अपना सांसद बदल देती है। यानी इन सीटों पर हर बार लोकसभा चुनाव में सत्ता विरोधी लहर चलती है। इन सीटों के वोटर हर 5 साल में नई सरकार को मौका देते हैं। साल 2014 में चली मोदी लहर को इन राज्यों की कई सीटों पर किनारा मिला, लेकिन, अब देखना ये है कि इस बार इन सीटों पर किसको कुर्सी मिलती है और किसकी सरकार बनती है। आइए जानते हैं कि आखिर वो कौन सी सीटें हैं जहां के सांसद के सिर दोबारा जीत का सेहरा नहीं बंध पाता है। अदिलाबादः तेलंगाना राज्य की यह सीट 2004 के लोकसभा चुनाव में टीआरएस के सांसद मधुसूदन रेड्डी टकाला के कब्जे में थी। साल 2009 में यह टीडीपी के रमेश राठौड़ के पास चली गई. 2014 में टीआरएस के गोदाम नागेश ने इस पर फिर कब्जा कर लिया। अल्मोड़ाः उत्तराखंड की इस सीट पर 2004 में भाजपा के सांसद बची सिंह रावत ने पांव जमा रखे थे। 2009 में यह कांग्रेस के प्रदीप टाम्टा के खाते में चली गई. 2014 में फिर इस सीट पर भाजपा के अजय टाम्टा ने वापस कब्जा कर लिया। अरुणाचल पश्चिमः अरुणाचल प्रदेश की इस सीट को 2004 में भाजपा के किरेन रिजीजू ने जीता। साल 2009 में यह कांग्रेस के तकाम संजय के पास चली गई. 2014 में फिर इस सीट पर भाजपा के किरेन रिजीजू ने वापस कब्जा कर लिया।

बालाकोट हमलाः मोदी के बयान पर चुनाव आयोग ने मांगी रिपोर्ट

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उस टिप्पणी पर संज्ञान लेते हुए महाराष्ट्र के चुनाव अधिकारी से रिपोर्ट मांगी है जिसमें उन्होंने (मोदी) पहली बार मतदान करने वाले युवाओं से बालाकोट कार्रवाई के परिप्रेक्ष्य में वोट देने की अपील की थी। चुनाव आयोग के सूत्रों के मुताबिक यह रिपोर्ट आयोग के उस सलाह के संदर्भ में मांगी गई है जिसमें कहा गया था कि राजनीतिक दल और उसके उम्मीदवार चुनाव प्रचार के दौरान रक्षा बलों की गतिविधियों के उपयोग से परहेज करें। उन्होंने बताया कि आयोग ने यह रिपोर्ट शीघ्र ही प्रस्तुत किये जाने के निर्देश दिए हैं। उल्लेखनीय है कि मंगलवार को महाराष्ट्र के लातूर में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार के पक्ष में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, '' मैं पहली बार मतदान करने वाले युवाओं से कहना चाहता हूं कि क्या आपका पहला वोट पाकिस्तान के बालाकोट में एयर स्ट्राइक करने वाले वीर जवानों के लिए समर्पित हो सकता है? क्या आपका पहला वोट पुलवामा में शहीद हुए हमारे वीर जवानों के लिए समर्पित हो सकता है?'' कांग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी(माकपा) समेत विपक्षी दलों ने प्रधानमंत्री की टिप्पणी की निंदा की और इसे आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन बताते हुए चुनाव आयोग से कार्रवाई करने का अनुरोध किया था। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता कपिल सिब्बल ने कहा, '' हमने चुनाव आयोग से बहुत सी शिकायतें की है , लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई और चुनाव के मद्देनजर हमारे पास अदालत जाने का समय नहीं है।'' माकपा के पोलित ब्यूरो सदस्य नीलोत्पल बसु ने कहा, '' हम आपसे आग्रह करते हैं कि चुनाव के माहौल को बिगडने से रोकने के लिए प्रभावी तरीके से उचित कार्रवाई शुरू की जाये ताकि राष्ट्रीय प्रतीक की पहचान का चुनावी उपयोग न किया जा सके।''

राहुल गांधी ने भरा नामांकन, शो में गांधी-वाड्रा फैमिली

अमेठी (एजेंसी) ।

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने आज नामांकन पत्र दाखिल किया। रास्ते में तीन किमी लंबे इस रोड शो के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने फूल और मालाओं के साथ राहुल गांधी का जोरदार स्वागत किया। राहुल गांधी, प्रियंका और रॉबर्ट वाड्रा ने हाथ हिलाकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं का अभिवादन किया। रोड शो के रास्ते को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस झंडों और फूल-मालाओं से भर दिया था। अमेठी में जश्न जैसा माहौल रहा। रोड शो के बाद राहुल गांधी ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में अपना पर्चा दाखिल किया। इस दौरान सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी, रॉबर्ट वाड्रा भी मौजूद रहे। बता दें कि अमेठी में छह मई को वोट डाले जाएंगे।

राहुल गांधी के रोड शो में प्रियंका गांधी और रॉबर्ट वाड्रा का जाना पहले से ही तय था, लेकिन इस तरह प्रियंका गांधी और रॉबर्ट वाड्रा के बेटा-बेटी की लॉन्चिंग चौंकाने वाला था। पूरे रोड शो में रेहान और मिराया ट्रक पर मौजूद रहे और उन्होंने लोगों का अभिवादन किया। अमेठी की सड़कों पर कांग्रेस कार्यकर्ता 72 हजार के झंडों के साथ पहुंचे हैं। झंडों पर न्याय योजना के बारे में छपा हुआ है और 72 हजार लिखा है?

टबता दें कि रोड शो में यूपीए चेयरपर्सन सोनिया गांधी को भी शामिल होना था, लेकिन वह नहीं आ पाईं। हालांकि वह नामांकन के दौरान उनके साथ रहीं। हालांकि वह नामांकन के दौरान उनके साथ रहीं।इससे पहले राहुल गांधी ने 2004, 2009 और 2014 में जब नामांकन दाखिल किया था, तब भी प्रियंका गांधी, रॉबर्ट वाड्रा और सोनिया गांधी मौजूद रहे थे।

लोगों ने मोदी को फिर से प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय कर लिया है : शाह

हैदराबाद (एजेंसी) ।

भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने मंगलवार को दावा किया कि लोगों ने एक बार फिर नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय कर लिया है। यहां एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बीते पांच वर्षों में मोदी सरकार ने देश का मान बढ़ाया है और इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि देश को सुरक्षित बनाने की है। उन्होंने कहा, दो कैंप हैं। एक कैंप नरेंद्र मोदी और राजग गठबंधन के देशभक्तों का है और दूसरा कैंप राहुल बाबा और गठबंधन का है। भाजपा नेता ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव द्वारा एक संघीय मोर्चा बनाए जाने का भी संदर्भ दिया। उन्होंने कहा, आप मुझे बताइए, क्या केसीआर किसी भी तरह प्रधानमंत्री बन सकते हैं? शाह ने कहा कि तेलंगाना राष्ट्र समिति कांग्रेस की तरह परिवारवाद की पार्टी है और दावा किया कि केवल भाजपा ही देश के विकास के लिए काम कर सकती है और इसे मजबूत बना सकती है। उन्होंने दावा किया कि भाजपानीत राजग सरकार ने पांच वर्षों में तेलंगाना को 2.45 लाख करोड़ रुपये मुहैया कराए हैं, जबकि संप्रग सरकार ने अपने 10 वर्ष के कार्यकाल में 16,500 करोड़ रुपये उपलब्ध कराए थे। जबकि संप्रग सरकार ने अपने 10 वर्ष के कार्यकाल में 16,500 करोड़ रुपये उपलब्ध कराए थे। उन्होंने कहा कि भाजपा द्वारा जारी घोषणापत्र भारत को सुपरपॉवर बनाने का दस्तावेज है। उन्होंने कहा, क्या टुकड़े-टुकड़े गैंग एक स्थिर और मजबूत सरकार दे सकता है? केवल भाजपा ऐसा कर सकती है। उन्होंने कहा कि जब भारत ने आतंकी कैंपों को तबाह करने के लिए पाकिस्तान में हवाई हमले किए थे, तो पूरा देश खुश था, लेकिन पाकिस्तान और राहुल बाबा व कंपनी में निराशा थी।

चुनावी मौसम में फिर गरमाया राफेल का मुद्दा, कांग्रेस-बीजेपी में ठनी- रक्षा मंत्रालय भी कूदा

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

उच्चतम न्यायालय द्वारा राफेल लड़ाकू विमान सौदे से संबंधित विशिष्ट एवं गोपनीय' दस्तावेजों को सुनवाई के लिए मान्य करार दिये जाने के बाद रक्षा मंत्रालय ने आज दोहराया कि याचिकाकर्ता इनका इस्तेमाल राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा से जुड़े मामले में आंतरिक एवं गोपनीय विचार-विमर्श की आधी-अधूरी तस्वीर पेश करने के लिए कर रहे हैं। उच्चतम न्यायालय ने राफेल लड़ाकू विमान सौदा मामले में बुधवार को एक महत्वपूर्ण फैसले में विशिष्ट एवं गोपनीय दस्तावेजों पर केंद्र सरकार के विशेषाधिकार के दावे को खारिज कर दिया और पुनर्विचार याचिकाओं की योग्यता के आधार पर सुनवाई करने का निर्णय लिया। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने दावा किया कि सुप्रीम कोर्ट ने मान लिया है कि डील में करप्शन हुआ। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को खुली बहस की चुनौती भी दे डाली। कुछ देर बाद बीजेपी की वरिष्ठ नेता और रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने कांग्रेस पर पलटवार किया। उन्होंने सवाल किया कि कांग्रेस प्रेजिडेंट जो कह रहे हैं, यह बात सुप्रीम कोर्ट ने कहां कही है? रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि मुझे कोई बताए कि क्या सुप्रीम कोर्ट में ऐसी कोई बात हुई है। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि जो खुद जमानत पर हैं, उन्हें कोर्ट के फैसले की गलत जानकारी देने का अधिकार किसने दिया। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने पश्चिम बंगाल की रैली में राफेल डील को लेकर पीएम मोदी पर हमला बोला। उन्होंने कहा, मोदी जी ने पहले कहा कि मुझे प्रधानमंत्री मत बनाओ, चौकीदार बनाओ और जब राफेल की चोरी पकड़ी गई तो कह रहे हैं कि पूरा देश चौकीदार। मोदीजी, ये नहीं चलेगा। इस देश में किसान, बेरोजगार, मजदूर हैं, जिनका आपने नुकसान किया है। न्यायालय के फैसले के बाद रक्षा मंत्रालय ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि याचिकाकर्ता राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा से जुड़े मामले में आंतरिक और गोपनीय विचार-विमर्श के बारे में चुनिंदा और आधी-अधूरी तस्वीर पेश करने की मंशा से इन दस्तावेजों का इस्तेमाल कर रहे हैं।

अदालत में याचिकाकर्ताओं द्वारा पेश दस्तावेजों से इस बात की सही जानकारी नहीं मिलती कि सौदे से जुड़े विभिन्न मुद्दों का समाधान कैसे किया गया और सक्षम अधिकारी से जरूरी मंजूरी किस तरह ली गयी। यह याचिकाकर्ताओं द्वारा चुनिंदा और आधे-अधूरे तथ्य पेश करने की कोशिश है। सरकार की मुख्य चिंता राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित संवेदनशील और गोपनीय दस्तावेजों के सार्वजनिक होने को लेकर है।

देश के इस बड़े नेता ने थामा भाजपा का दामन, कांग्रेस को बड़ा झटका

नई दिल्ली । राजस्थान के गुर्जर नेता किरोड़ी सिंह बैंसला बुधवार को यहां भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। बैंसला को भाजपा मुख्यालय में पार्टी की सदस्यता दिलाई गई। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता और मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर भी उपस्थित थे। बैंसला के साथ उनके पुत्र विजय बैंसला भी थे। इस अवसर पर बैंसला ने कहा कि गुर्जरों को नौकरी में आरक्षण देने की मांग को लेकर वह पिछले 14 साल से आन्दोलन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से प्रभावित होकर भाजपा में शामिल हुये हैं और उन्हें किसी पद का लालच नहीं है। बैंसला सेना में रहे हैं। सेवानिवृत्ति के बाद से वह सामाजिक कार्यों से जुड़े हैं। बैंसला से पहले राजस्थान के बड़े जाट नेता हनुमान बेनिवाल ने भी भारतीय जनता पार्टी से हाथ मिलाया है। लोकसभा चुनावों से ठीक पहले राजस्थान के दो बड़े समुदाय के बड़े नेताओं को अपने खेमे में मिलाकर भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा चुनावों के लिए ।

इलेक्शन डॉयरीः एक्सीडेंटल फाइनेंस मिनिस्टर भी थे मनमोहन सिंह

इलेक्शन डेस्क (एजेंसी) ।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को एक्सीडैंटल प्राइम मिनिस्टर कहा जाता है और इस पर उनके मीडिया प्रभारी रहे संजय बारू ने किताब लिखी और इस किताब के आधार पर एक फिल्म भी आ गई लेकिन बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी होगी कि मनमोहन सिंह एक्सीडैंटल प्राइम मिनिस्टर ही नहीं बल्कि एक्सीडैंटल फाइनैंस मिनिस्टर भी थे। जी हां, जब 1991 के चुनाव में कांग्रेस ने जीत दर्ज की और सरकार बनाने का समय आया तो मनमोहन सिंह यू.जी.सी. में बतौर चेयरमैन कार्यरत थे और उन्होंने लोकसभा का चुनाव भी नहीं लड़ा था।

जब मंत्रिमंडल के चयन की बारी आई तो पी.वी. नरसिम्हा राव किसी ऐसे चेहरे की तलाश में थे जो देश के मौजूदा हालातों के अनुसार आर्थिक नीतियां बनाने में उनकी मदद कर सके, लिहाजा उन्होंने मनमोहन सिंह के मित्र आई.जी. पटेल को वित्त मंत्री बनने के लिए कहा लेकिन पटेल के इंकार करने के बाद राव के सलाहकार पी.सी. एलैक्जैंडर ने उन्हें मनमोहन सिंह का नाम सुझाया। राव ने मनमोहन सिंह के नाम पर सहमति दे दी और पी.सी. एलैक्जेंडर ने मनमोहन सिंह को 21 जून, 1991 को शपथ ग्रहण समारोह से एक दिन पहले शाम को उन्हें वित्त मंत्री बनाए जाने की सूचना दी लेकिन मनमोहन सिंह पी.सी. की इस पेशकश को नजरअंदाज करके अगले दिन यू.जी.सी. में अपनी ड्यूटी पर चले गए। ड्यूटी के दौरान ही उन्हें पी.वी. नरसिम्हा राव ने फोन किया और पूछा कि क्या पी.सी. एलैक्जेंडर ने आपको मेरी पेशकश के बारे में नहीं बताया तो मनमोहन सिंह ने जवाब दिया कि मैंने उन्हें गंभीरता से नहीं लिया है। इस पर राव ने मनमोहन सिंह को तुरंत तैयार होकर शपथ ग्रहण समारोह में पहुंचने को कहा। इस तरह से मनमोहन सिंह बिना राज्यसभा सदस्य और बिना लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए वित्त मंत्री बने। उन्हें पद पर बैठाने के 6 महीने के भीतर सदन का सदस्य बनाना जरूरी था ।

भाजपा ने दूसरे और तीसरे चरण के लिए प्रचार में झोंकी ताकत

लखनऊ(एजेंसी) ।

लोकसभा चुनाव के पहले चरण के चुनाव का प्रचार थमने के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दूसरे और तीसरे चरण के चुनाव के लिए प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष से लेकर संगठन और सरकार के कई नेता बुधवार को प्रदेश में जनसभाएं और बैठक कर रहे हैं। प्रदेश के मीडिया इंचार्ज मनीष दीक्षित के मुताबिक, ÷भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह आज (बुधवार) एटा लोकसभा क्षेत्र में कासगंज स्थित भागवत इंटर कॉलेज और फिर फिरोजाबाद के पीडी जैन इंटर कॉलेज में भाजपा उम्मीदवारों के पक्ष में जनसभा करेंगे।÷ उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आंवला लोकसभा क्षेत्र में फरीदपुर स्थित सीएस इंटर कालेज, फिर बदायूं लोकसभा क्षेत्र में मुजडिया तिराहे के सामने बिलसी, फतेहपुर सीकरी लोकसभा क्षेत्र के बाह और सबसे बाद में एटा क्षेत्र में जलेसर स्थित एमजी कालेज ग्राउंड में आयोजित सभा को संबोधित करेंगे।

नायडू का सीईओ कार्यालय पर धरना, कहा- चुनाव आयोग के कदम अन्यायी, अलोकतांत्रिक

अमरावती (एजेंसी) ।

आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को सचिवालय पर मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) कार्यालय के समक्ष कई अधिकारियों के तबादले पर विरोध स्वरूप धरना देते हुये उसके इस कदम को 'अन्यायी, अलोकतांत्रिक और मनमानी कार्रवाई'' बताया। इससे पहले, नायडू ने सीईओ गोपाल कृष्ण द्विवेदी से मुलाकात की और उन्हें ज्ञापन सौंपा। उन्होंने चुनाव आयोग पर आरोप लगाया कि वह ''भाजपा के निर्देश पर वाईएसआर कांग्रेस के लिए'' काम कर रहा है। तेदेपा प्रमुख ने भारत निर्वाचन आयोग को भी इस मुद्दे पर लिखा। उन्होंने राज्य में चुनाव संबंधी मामलों से निपटने में चुनाव आयोग पर ''निरकुंश और भेदभावपरक मनोवृत्ति'' रखने का आरोप लगाया। उनका इशारा राज्य के मुख्य सचिव, खुफिया महानिदेशक (डीजी) और तीन जिलों के पुलिस अधीक्षकों के स्थानांतरण की ओर था। उन्होंने विशेष पुलिस पर्यवेक्षक पर सेवानिवृत्त आइपीएस केके शर्मा की तैनाती पर सवालिया निशान लगाते हुये कहा कि वह ''आरएसएस की पृष्ठभूमि वाले पूर्वाग्रह से युक्त व्यक्ति'' है। मुख्यमंत्री ने अनुसार जब से चुनावों की घोषणा हुई है और आदर्श आचार संहिता अस्तित्व में आई है ।

गुजरातः नाराज अल्पेश ने छोड़ी कांग्रेस, थाम सकते हैं बीजपी का दामन

नेशनल डेस्क (एजेंसी) ।

चुनावी गहमागहमी के बीच कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव तथा बिहार के सह प्रभारी और गुजरात के राधनपुर से पार्टी विधायक अल्पेश ठाकोर ने आज पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। ठाकोर राज्य में उनकी जाति के संगठन ठाकोर सेना के भी प्रमुख रहे हैं। समझा जाता है कि वह पाटन लोकसभा सीट से टिकट चाहते थे पर पार्टी ने वहां से जगदीश ठाकोर को टिकट दे दिया। इससे वह खासे नाराज थे। कांग्रेस ने कई अन्य विधायकों को गुजरात में अलग अलग सीटों से टिकट दिये हैं। ठाकोर के पार्टी छोड़ने की अटकलें पिछले काफी समय से चल ही थी और कुछ ही दिनों पहले उन्होंने स्वयं इसका खुलासा किया था कि वह भाजपा में जाने वाले थे पर उन्होंने अपना आंदोलन जारी रखने के लिए ऐसा नहीं किया। आज ही उनके संगठन ठाकोर सेना की कोर कमेटी की बैठक में कांग्रेस से समर्थन वापस लेने की बात कही गयी थी। इसी समुदाय के दो और कांग्रेसी विधायकों और उनके करीबी धवल झाला और भरतजी ठाकोर भी समझा जाता है कि जल्द ही ऐसा कोई कदम उठा सकते हैं । ठाकोर ने गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अमित चावडा को भेजे अपने त्यागपत्र में लिखा है कि वह अपने समाज और गरीबों के उत्थान के लिए राजनीति में जुड़े थे। कांग्रेस की ओर से उनके संगठन की अवहेलना से उनके समुदाय में खासी नाराजगी है। वह कांग्रेस से इसके खराब समय में जुड़े थे। अब उनकी ठाकोर सेना का आदेश है कि वह पार्टी के सभी पदों से त्यागपत्र दें। दु.ख और विश्वासघात के एहसास के साथ वह पार्टी से त्यागपत्र दे रहे हैं। दु.ख और विश्वासघात के एहसास के साथ वह पार्टी से त्यागपत्र दे रहे हैं। उन्होंने अपने इस्तीफे के अंत में लिखा है कि कांग्रेस में किसी एक चीज की कमी रहीं तो वह थी सम्मान की और जो एक चीज मिली वह थी विश्वासघात की। इस्तीफे के बावजूद फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि ठाकोर का अगला कदम क्या होगा। उनके भाजपा में शामिल होने की भी अटकले हैं। राज्य में इससे पहले कांग्रेस के पांच विधायक इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो चुके हैं। अभी ज्ञातव्य है कि कांग्रेस ने पूर्व में राजस्थान में लोकसभा चुनाव के लिए स्टार प्रचारकों की सूची में श्री ठाकोर का नाम रखा था पर उसे बाद में वापस ले लिया गया।

संपादकीय

चुनावी शिकायत

चुनावी वादा न निभाने पर पुलिस में शिकायत कर देने का विरल मामला जहां हमें चौंकाता है, वहीं शिकायतकर्ता की राजनीतिक बेचैनी को भी जाहिर करता है। चुनावी वादा न निभाने पर शिकायत किसी आम आदमी ने नहीं, बल्कि ओडिशा की सत्ताधारी पार्टी बीजू जनता दल ने दर्ज कराई है। शिकायत दर्ज करने वाली ओडिशा पुलिस का कहना है कि भाजपा ने वर्ष 2014 में ओडिशा को विशेष दर्जा देने का वादा किया था, लेकिन उसे नहीं निभाया और वर्ष 2019 के घोषणापत्र में उस वादे का जिक्र तक नहीं किया। यह वादा न निभाना ओडिशा के 4.5 करोड़ लोगों के साथ धोखा है। क्या किसी चुनावी वादे के पूरे न होने पर इस तरह से शिकायत दर्ज कराना उचित है? क्या चुनावी वादा कानून-व्यवस्था से जुड़ा विषय है? क्या पुलिस को किसी राजनीतिक दल के खिलाफ किसी राजनीतिक दल की ऐसी शिकायत लेने या दर्ज करने का अधिकार है? आखिर आज के समय में राजनीति के मैदान में ऐसा कौन है, जिसने अपने सारे वादे निभाए हैं? गरीबी मिटाने का वादा, भ्रष्टाचार खत्म करने का वादा, सुशासन का वादा, सबको मकान, पानी, बिजली, सड़क देने का वादा लगभग हर पार्टी करती आई है। क्या ओडिशा में ये सभी आधारभूत वादे लगभग 20 साल से सत्ताधारी बीजू जनता दल ने निभा दिए हैं? ओडिशा क्षेत्रफल में देश का नौवां बड़ा राज्य, जनसंख्या में 11वां और विकास के पैमाने पर 25वां राज्य है? ओडिशा फिसड्डी क्यों है? क्या लगभग 20 वर्ष से राज्य की सेवा कर रहे मुख्यमंत्री नवीन पटनायक से ये सवाल नहीं पूछे जा सकते? क्या उनके खिलाफ भावना में बहकर या महज चुनावी बढ़त के लिए पुलिस में शिकायत दर्ज कराना गलत नहीं होगा? कहीं ऐसा तो नहीं कि यह शिकायत दर्ज करवाकर राज्य के अविकास का ठीकरा बीजू जनता दल प्रतिद्वंद्वी भाजपा या केंद्र सरकार के माथे फोड़ना चाहता है? क्या ओडिशा का विकास मात्र इसलिए नहीं हो सका है, क्योंकि उसे भाजपा ने विशेष राज्य का दर्जा नहीं दिया? पुलिस में हुई यह शिकायत न केवल हमारी राजनीति के वैचारिक हल्केपन को दर्शाती है, बल्कि यह भी जाहिर करती है कि कोई सत्ताधारी पार्टी अपने बचाव में बहाने खोजती हुई किस स्तर तक जा सकती है। यदि वाकई पुलिस ने शिकायत दर्ज कर ली है और अगर पुलिस वाकई इस पर कार्रवाई या राजनीति में हस्तक्षेप करने जा रही है, तो तय है कि भारतीय राजनीति में एक नई स्याह परंपरा की शुरुआत हो जाएगी। दूध की धुली न कोई पार्टी है, न कोई नेता। जाहिर है, सबके खिलाफ वादाखिलाफी या चार सौ बीसी के मामले दर्ज हो जाएंगे। वर्ष 2014 में भाजपा का सबसे बड़ा वादा ओडिशा को विशेष राज्य का दर्जा देना था, लेकिन जनता ने बीजू जनता दल से मुकाबले में भाजपा को 20-1 से नकार दिया था। भाजपा यह सफाई दे सकती है कि ओडिशा के मतदाता विशेष दर्जा पाने के पक्ष में नहीं थे। बीजद का मानना है कि भाजपा को यह वादा राज्य में हारने के बावजूद निभाना चाहिए था? इस तरह की राजनीति वास्तव में आम लोगों को मूल मुद्दों से भटकाने का काम करती है। ऐसी अनेक शिकायतें व बहानेबाजियां चुनाव में चल रही हैं, मामले भले पुलिस में दर्ज न हो रहे हों। लिहाजा समय की मांग है कि हम पूरी तरह से सूचित और सचेत रहें।

ट्वीट

साबित

एक कदम आगे, दो कदम पीछे-कुछ ऐसी ही मोदी सरकार की कश्मीर नीति है। सरकार द्वारा 400 राजनेताओं, कार्यकर्ताओं की सुरक्षा बहाली तो यही साबित करती है।

मधु पुर्णिमा किश्वर, लेखिका

बिना लहर सत्ता की सवारी की आस

राजकुमार सिंह/ दरअसल

केंद्र और ज्यादातर राज्यों में सत्तारूढ़ भाजपा ने सत्रहवीं लोकसभा के चुनावों के लिए फिर एक बार मोदी सरकार को अपनी मुख्य चुनावी थीम बनाया है। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों में अबकी बार मोदी सरकार का नारा इस कदर चल निकला था कि केंद्र में भाजपानीत राजग सरकार ही नहीं बनी, देश के मतदाताओं ने तीन दशक बाद किसी एक दल के रूप में भाजपा को अकेलेदम भी बहुमत देते हुए मनमोहन सिंह की अगुवाई वाली कांग्रेसनीत संप्रग सरकार को सत्ता से बेदखल कर दिया। निश्चय ही यह भाजपा के लिए ऐतिहासिक राजनीतिक उपलब्धि थी क्योंकि लगातार 10 साल प्रधानमंत्री रहे ख्यात अर्थशास्त्री की छवि वाले विनम्र मनमोहन सिंह के मुकाबले उसने गुजरात के तीन बार मुख्यमंत्री रहे नरेंद्र मोदी को अपना प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया था। बेशक वाइब्रेंट गुजरात सरीखे आयोजनों से विकास के गुजरात मॉडल की चर्चा तब तक देश की राजधानी दिल्ली तक पहुंच चुकी थी, लेकिन मोदी की छवि पर गुजरात दंगे भी सवालिया निशान बने हुए थे। यह भी कि भाजपा और उसके मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अटल बिहारी वाजपेयी के बाद पार्टी के सबसे कद्दावर नेता माने जाने वाले लालकृष्ण आडवाणी की नाराजगी की कीमत पर मोदी को चुना था। वही आडवाणी, जो वाजपेयी सरकार में उपप्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री रहे तथा 2009 के लोकसभा चुनाव में भाजपानीत राजग के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार भी। जिस राम मंदिर आंदोलन या अयोध्या रथयात्रा ने आडवाणी को अचानक जननेता बना दिया था, उसके मुख्य प्रबंधक मोदी ही थे। कह सकते हैं कि वाजपेयी-आडवाणी की जोड़ी की उंगली पकड़कर राजनीतिक गलियारों में चलना सीखने वाली भाजपा की दूसरी पंक्ति के ही मोदी भी प्रतिभाशाली-संभावनाशील सदस्य रहे। खुद संघ-भाजपा के जानकारों की मानें तो मोदी, वाजपेयी के बजाय आडवाणी के ज्यादा करीब रहे। शायद इसीलिए गुजरात दंगों के बाद जब तत्कालीन प्रधानमंत्री वाजपेयी, मुख्यमंत्री मोदी को राजधर्म याद दिला रहे थे तो आडवाणी उनके कवच बन गये। इस सबके बावजूद विदेशों में जमा काला धन वापस लाकर हर भारतीय के खाते में 15 लाख रुपये जमा करने का मोदी का वायदा और अच्छे दिन लाने का नारा जिस तरह मतदाताओं के सिर चढ़कर बोला, वह अभूतपूर्व था। इसे भाजपा का बड़प्पन कहिए या दूरंदेशी कि अकेलेदम बहुमत मिल जाने पर भी उसने केंद्र में राजग सरकार का ही गठन किया। हां, उसने सहयोगी दलों को मंत्रालयों के लिए संप्रग शासन जैसी सौदेबाजी और फिर खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया, पर खुली छूट तो मोदी ने खुद भाजपा मंत्रियों तक को नहीं दी। तीन दशक के लंबे अंतराल के बाद स्पष्ट बहुमत से बनी सरकार का सर्वशक्तिमान प्रधानमंत्री होने के नाते मोदी से यह अपेक्षा अनुचित हरगिज नहीं कही जा सकती कि वह अपने वायदों पर खरा उतरते और चुनाव प्रचार के दौरान दिखाये गये सपने पूरे करने के प्रयास भी करते। अब जिस तरह सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव प्रचार के दौरान, और घोषणापत्र में भी, पिछले चुनावों के वायदों से मुंह चुराते हुए नये नारे और वायदे गढ़ लिये गये हैं, वही इस बात का मुंह बोलता प्रमाण है कि भाजपा और मोदी ने वायदे वफा नहीं किये। विदेशों में जमा काला धन वापस लाकर हर भारतीय के खाते में 15 लाख जमा करने को तो खैर जुमला ही करार दे दिया गया, कृषि क्षेत्र की दशा सुधारने के लिए स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें लागू करने से भी भाजपा और मोदी सरकार साफ मुकर गयी। वादा हर साल दो करोड़ नौकरियां देने का था, लेकिन खुद सरकारी आंकड़े बता रहे हैं कि रोजगार सृजन के मामले में मोदी सरकार का रिकॉर्ड बेहद निराशाजनक रहा। इसमें नोटबंदी की भूमिका भी कम नहीं रही। काला धन, नकली करंसी और आतंकवाद की फंडिंग रोकने के नाम पर की गयी नोटबंदी के लिए मोदी सरकार और भाजपा चाहे जितनी अपनी पीठ खुद ठोकते रहे हों, लेकिन चुनाव घोषणापत्र में उसका जिक्र तक न होना बताता है कि सच क्या है। एक देश-एक कर के नारे के साथ लागू जीएसटी का सच भी धीरे-धीरे घोटालों के खुलासे के रूप में सामने आ ही रहा है। हम सभी जानते हैं कि जीएसटी लागू हो जाने के बावजूद छोटे ही नहीं, मझोले दुकानदार भी बिना बिल माल बेच रहे हैं और लोग खरीद भी रहे हैं। बिना गहन अध्ययन और पूरी तैयारी के उठाये गये कदमों ने उस आम आदमी की मुश्किलें ही बढ़ायीं, जिसे अच्छे दिन आने का सपना दिखाया गया था। अब अपने बचाव में मोदी सरकार चाहे जो भी तर्क गढ़े, लेकिन सच यही है कि लोकसभा में स्पष्ट बहुमत के बावजूद राम मंदिर, धारा 370 और समान नागरिक संहिता सरीखे भाजपा की पहचान से जुड़े परंपरागत मुद्दों पर भी उसका रुख अवसरवादी ही रहा। जिस पीडीपी पर भाजपा कई तरह के आरोप लगाती रही, जम्मू-कश्मीर में सत्ता की खातिर उसी से गठबंधन कर लिया। और जब वह गठबंधन सरकार अपनी नियति को प्राप्त हो गयी तो फिर भाजपा को पीडीपी का असली चरित्र तथा धारा 370 एवं अनुच्छेद 35-ए की सुध आ गयी है। यहां सवाल समर्थन-विरोध का नहीं है, लेकिन राम मंदिर पर भाजपा और उसके समर्थक संत संगठनों की ठीक चुनाव से पहले सक्रियता भाजपा की प्रतिबद्धता की बाबत बहुत कुछ कह देती है। मुद्दों से मुंह चुराने और वायदों पर खरा न उतरने के उदाहरणों की यह फेहरिस्त बहुत लंबी हो सकती है। इसीलिए भाजपा को नये मुद्दे और नारे गढ़ने की जरूरत पड़ रही है। उत्तर प्रदेश से लेकर पूर्वोत्तर तक छोटे-छोटे दलों के रूप में नये साथी भी तलाशने पड़े हैं। स्वाभाविक ही यह सब भाजपा के डांवांडोल आत्मविश्वास का संकेतक है जो केंद्रीय सत्ता में आने पर लगभग चार साल चरम पर रहा। अब क्योंकि वर्ष 2014 जैसी मोदी लहर नहीं है और नये वायदों पर पुराने वायदों की बेवफाई से उपजे सवाल भारी पड़ रहे हैं, फिर एक बार मोदी सरकार की राह आसान हरगिज नहीं है। भाजपा की कोशिश जारी है कि मोदी को केंद्र में रखकर उन्हीं के नेतृत्व के मुद्दे पर चुनाव लड़ा जाये क्योंकि विभाजित विपक्ष में कोई सर्व स्वीकार्य और प्रभावी नेता नहीं है। निश्चय ही समकालीन नेताओं में मोदी सबसे प्रभावी और लोकप्रिय नेता हैं, लेकिन ऐसा सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर है। कह सकते हैं कि राष्ट्रीय स्तर पर मोदी का स्वीकार्य विकल्प फिलहाल नजर नहीं आता, पर कोई भी शून्य हमेशा नहीं रहता। लौह महिला कही गयी इंदिरा गांधी का भी विकल्प उभरा और प्रचंड बहुमत प्राप्त राजीव गांधी का भी। सबसे विद्वान प्रधानमंत्री माने गये नरसिंह राव का भी विकल्प आखिर देवगौड़ा और गुजराल के रूप में उभरा ही। दरअसल मोदी के विकल्प की अनुपलब्धता सीधे-सीधे कांग्रेस की राजनीतिक विफलता का प्रमाण और परिणाम भी है। फिर भी अगर फिर एक बार—मोदी सरकार की राह आसान नजर नहीं आ रही तो इसलिए कि जब लहर न हो तो कम प्रभावी चुनौतियां भी रास्ते का रोड़ा बन जाती हैं। प्रधानमंत्री पद भले ही अरसे से उत्तर प्रदेश को नसीब न हुआ हो, पर दिल्ली की सत्ता का रास्ता अब भी निकलता वहीं से है। 2014 के चुनाव में भाजपा को उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों में से 71 मिली थीं, जबकि दो उसके सहयोगी दल को। इस बार हालात बदले हुए हैं। एक के बाद एक तीन लोकसभा उपचुनावों में भाजपा को मात देने से उत्साहित सपा-बसपा-रालोद महागठबंधन कर चुनाव लड़ रहे हैं। इनके वोट बैंकों के अंक गणित से 2014 का चुनावी परिदृश्य एकदम न भी उलटे, पर बदलना तो तय है। कांग्रेस महागठबंधन का अंग नहीं है, पर सिर्फ किसी एक ही पक्ष को नुकसान पहुंचायेगी, ऐसा मानना गलत होगा। कुछ महीने पहले ही कांग्रेस ने भाजपा से राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सत्ता छीनी है। इन तीनों राज्यों का भी 2014 में भाजपा की केंद्र में ताजपोशी में बड़ा योगदान रहा था, जो इस बार वैसा तो हरगिज नहीं होगा। बिहार में भी, नीतीश कुमार से पुन- दोस्ती के बावजूद, भाजपा के लिए 2014 की पुनरावृत्ति संभव नहीं होगी। एक अनुमान के मुताबिक पिछली बार की तुलना में भाजपा की 60-70 लोकसभा सीटें घट सकती हैं। बेशक पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और पूर्वोत्तर से भाजपा को भारी उम्मीदें हैं, पर वह उत्तर भारत के घाटे की भरपाई कर पायेगी, इसमें शक है। इसीलिए रायसीना हिल्स की राह मोदी के लिए इस बार आसान हरगिज नजर नहीं आती।

ज्ञान गंगा

सांस

जग्गी वासुदेव/ जैसे-जैसे हमारी जागरूकता में तीव्रता और पैनापन आने लगता है, एक बात जिसके बारे में हम स्वाभाविक रूप से सबसे पहले जागरूक होते हैं, वह है सांस। हमारे शरीर में चलने वाली सांस, एक यांत्रिक प्रक्रिया है, जो लगातार बिना रु के चलती है। यह बहुत आश्चयजनक है कि कैसे अधिकतर लोग इसके बारे में जागरूक हुए बिना ही जीते रहते हैं। लेकिन, एक बार जब आप सांस के बारे में जागरूक हो जाते हैं, तो यह एक अद्भुत प्रक्रिया बन जाती है। इसमें कोई आश्चय नहीं है कि आज ''सांस को देखना' संभवत- ध्यान की सबसे अधिक लोकप्रिय विधियों में से है। यह मूलभूत और सरल है, तथा इतनी आसानी से और स्वाभाविक रूप से होती है कि इसके लिए कोई तैयारी नहीं करनी पड़ती। अगर आप थोड़े से ज्यादा सचेत हो जाते हैं, तो आप की सांस स्वाभाविक रूप से आप की जागरूकता में आ जाएगी। मैं छह-सात वर्ष का था, जब मैंने अपनी सांस का आनंद लेना शुरू किया। अपनी छोटी-सी छाती और पेट को लयबद्ध ढंग से ऊपर-नीचे होते देखने में मुझे बहुत रुचि थी और मैं घंटों तक बस यही करता रहता था। ध्यान का विचार तो काफी बाद में मेरे जीवन में आया। तो अगर आप थोड़े से भी सचेत हैं, तो आप सांस की सरल लय को अनदेखा नहीं कर सकते, जो बिना रुके चलती रहती है। अधिकतर लोगों का ध्यान अपनी सांस की ओर तभी जाता है, जब उनकी श्वास नलियों में ऐंठन आ जाती है, या सांस ज्यादा तेजी से चलती है। वे अपनी सामान्य सांस को अनदेखा कर रहे हैं, सिर्फ इसलिए कि उनमें ध्यान देने की कमी एक गंभीर समस्या का रूप लेती जा रही है। और आजकल तो लोग ध्यान की कमी को एक योग्यता की तरह देख रहे हैं। अपने जीवन में, और खास तौर पर अपने बच्चों के जीवन में, ध्यान देने की प्रवृत्ति लाना बहुत महत्वपूर्ण है। आखिर में, बात चाहे आध्यात्मिक हो या सांसारिक, दुनिया से आप को उतना ही मिलता है, जितना आप ध्यान देने को तैयार हैं। सांस पर ध्यान देना वैसे तो एक जबरन प्रयास है। लेकिन यह आपको सचेत करने का एक तरीका भी है। महत्वपूर्ण चीज अपनी सांस पर ध्यान केंद्रित करना नहीं है, बल्कि अपनी जागरूकता के स्तर को इतना ऊंचा उठाना है कि आप स्वाभाविक रूप से अपनी सांस के प्रति सचेत हो जाएं। सांस लेना एक यांत्रिक प्रक्रिया है।

वादों से भरमाने का अंतहीन सिलसिला

चुनावी घोषणा पत्र/ ज्ञानेन्द्र रावत

आजकल देश में जैसे-जैसे मतदान की तिथि नजदीक आती जा रही है, चुनावी प्रचार तेजी पकड़ता जा रहा है। राजनीतिक दल लोकलुभावन नारों, वादों और सब्जबागों से भरे चुनावी पिटारे रूपी अपने चुनावी घोषणा पत्रों का ऐलान कर रहे हैं। चुनाव आयोग स्पष्ट कर चुका है कि राजनीतिक दल चुनाव में मुफ्त उपहार और वस्तुएं देने का वादा नहीं कर पायेंगे। साथ ही उनको यह विस्तार से बताना पड़ेगा कि जो वादे उन्होंने किए हैं, उनको वह कैसे पूरा करेंगे। दरअसल चुनाव आयोग ने साल 2015 में ही चुनाव से पूर्व जारी होने वाले राजनीतिक दलों के चुनावी घोषणा पत्रों को आदर्श चुनाव आचार संहिता के दायरे में ले लिया था। उस समय चुनाव आयोग ने निर्देश जारी किया था कि वह अपने चुनावी घोषणा पत्रों की प्रति चुनाव आयोग को आवश्यक रूप से भेजें। यह भी कि मतदाताओं का विश्वास उन्हीं वादों पर हासिल किया जाना चाहिए, जिन्हें पूरा किया जाना संभव हो। राजनीतिक दलों के जो भी वादे हों, वह संविधान के सिद्धांतों के विरुद्ध न हों और आचार संहिता के प्रावधानों के अनुरूप हों। सुप्रीमकोर्ट ने घोषणा पत्रों को अपवाद के रूप में आचार संहिता के दायरे में लाने का निर्देश दिया था। कोर्ट का मानना था कि घोषणा पत्र चुनाव से पहले जारी किये जाते हैं, जिससे ये आचार संहिता के दायरे में नहीं आते।

लेकिन इनमें किये वादे चुनाव के मैदान का संतुलन बिगाड़ते हैं, जिसके चलते ही कोर्ट ने आयोग को इस बारे में राजनीतिक दलों के लिए दिशानिर्देश बनाने का आदेश दिया था। इसके बाद ही आयोग ने राजनीतिक दलों से विचार-विमर्श कर विस्तृत दिशानिर्देश तैयार किये। यह बात दीगर है कि कुछ राजनीतिक दलों ने इसका पुरजोर विरोध किया था। भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी का कहना था कि घोषणा पत्र पार्टी का वोटरों से किया गया वादा होता है। इसमें आयोग का दखल नहीं होना चाहिए। जबकि कांग्रेस के शकील अहमद का कहना था कि इस मुद्दे पर राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए। आज देश के राजनीतिक दल अपने हिसाब से चुनावी वादे करने में मशगूल हैं। पर्यावरण, प्रदूषण आदि मुद्दों पर तो वह कतई गंभीर हैं ही नहीं। डब्ल्यूएचओ ने बीते साल देश के जिन 14 शहरों को विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की सूची में शामिल किया था, उनमें अभी हाल तक कोई सुधार नहीं हुआ है। क्लाइमेट ट्रेंड की हालिया रिपोर्ट में इस स्थिति के लिए सरकारों के साथ जनप्रतिनिधियों को जिम्मेदार माना है। अभी तक उन शहरों में प्रदूषण निगरानी केन्द्र तक नहीं खुले हैं। दलों द्वारा क्षेत्र में जातियों के बाहुल्य के मद्देनजर जातियों का गठजोड़-गठबंधन और उसी के हिसाब से उम्मीदवारों का चयन इसका जीता-जागता सबूत है। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि इस दौरान न तो गरीबी हटी, न बेरोजगारी ही खत्म हुई, न भुखमरी का खात्मा हुआ, न असमानता मिटी, न समुचित चिकित्सा के अभाव में बेमौत मरने वालों की तादाद में ही कोई कमी आई, न कुपोषण की समस्या का खात्मा हुआ। आज हालत यह है देश में कुपोषण के चलते कमजोर बच्चों की तादाद 34.70 फीसदी है। इसके अलावा न अन्नदाता किसानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं पर ही अंकुश लगा।

लोकसभा की 543 सीटों में से यदि शहरी इलाकों की 57 सीटें छोड़ दें तो 342 सीटें ऐसी हैं जो ग्रामीण इलाकों से आती हैं जहां के किसान ही राजनीतिक दलों की किस्मत का फैसला करते हैं। असलियत यह है कि बीते सालों में खाद्यान्न की कीमतों में भारी कमी के चलते किसानों की कमाई में काफी कमी आई है। साथ ही कर्ज का बढ़ता बोझ और किसान सम्मान निधि की नाकामी उनकी बदहाली का अहम कारण है। जबकि दावा किया गया था कि इस योजना से 86 फीसदी किसान परिवारों को लाभ मिलेगा। जब चुनाव की बात आती है, सबसे पहले गरीबी के मुद्दे की चर्चा होने लगती है। असल में गरीबी वह अहम कारण है, जिसके कारण नागरिकों के गुलामी में पड़ने की आशंका बढ़ जाती है। जाहिर है गरीबी हटाने के वायदे तो किये जाते रहे लेकिन उसे मिटाने की दिशा में गंभीरता से कभी अमल नहीं किया गया। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज का मानना है कि देश का यह चुनाव दुनिया का सबसे महंगा चुनाव है। इसका कुल खर्च 500 अरब के आंकड़े तक को पार कर जायेगा। जिस देश के आम आदमी के लिए रोजाना खर्च के लिए 250 रुपये तक मयस्सर नहीं होते, वहां प्रति मतदाता पर होने वाला खर्च 560 रुपये के करीब पहुंच जाये, यह विचार का विषय है। जाहिर है चुनावी खर्च में मितव्ययिता किये जाने की दिशा में चुनाव आयोग भी गंभीर नहीं दिखाई देता। बहरहाल 23 मई को रिपोर्ट कार्ड जनता के सामने आ जायेगा कि किसके कितने वादों पर देश की जनता ने मुहर लगायी है और चुनाव आयोग के निर्देशों का किस दल या प्रत्याशी ने कितना पालन किया है।

आज का राशिफल

मेष व्यावसायिक समस्या सुलझाने में आप सफल होंगे। रक्तचाप या हृदय रोगी स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। टकराव की स्थिति आपके हित में न होगी। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं।

वृषभ पारिवारिक सदस्यों का सहयोग मिलेगा। आपके प्रभाव तथा वर्चस्व में वृद्धि होगी। किसी बहुमूल्य वस्तु के पाने की अभिलाषा पूरी होगी। कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

मिथुन आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे।

कर्क राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। खानपान में संयम रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। व्यर्थ के तनाव मिलेंगे

सिंह पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। पारिवारिक जनों से तनाव मिलेगा। वाणी पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे।

कन्या पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। धन लाभ होगा। रुपए पैसे के लेन देन में सावधानी रखें। वाणी की सौम्यता आवश्यक है। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

तुला पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। व्यावसायिक क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। अनावश्यक कष्ट का सामना करना पड़ेगा। किसी अभिन्न मित्र से मिलाप होगा। धन हानि की संभावना है।

वृश्चिक शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। विरोधियों का पराभव होगा।

धनु आर्थिक योजना सफल होगी। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। जारी प्रयास सार्थक होगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। अनावश्यक कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

मकर जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। रोजी रोजगार की दिशा में प्रगति होगी। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। मकान, सम्पत्ति व वाहन की दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा।

कुम्भ गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। पारिवारिक जनों से तनाव मिलेगा। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें।

मीन व्यावसायिक योजना फलीभूत होगी। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। पारिवारिक जनों का सहयोग मिलेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कलपेश्वर : धार्मिक यात्रा के साथ पर्यटक भी

पंच केदार का सबसे आखिरी मंदिर है कलपेश्वर मंदिर। यही एक ऐसा पवित्र मंदिर है, जिसके पट पूरे साल खुले रहते हैं। यहां के मंदिर में मुख्य भगवान के रूप में विराजमान शिव की पूजा-अर्चना की जाती है। यहां पहुंचने के लिए घने जंगलों और मैदान से गुजरना पड़ता है। यहां बेहद ही पुराना कलपेश्वर वृक्ष है। कहा जाता है कि इस वृक्ष से जो भी मुराद मांगो वह पूरी होती है। समुद्र तल से 2,134 मीटर की ऊंचाई पर कलपेश्वर चमोली के अरगम जिले में है। हेलांग से 1 1 किलोमीटर दूर इस जगह पर यहां से ट्रैकिंग कर पहुंचा जा सकता है। दिल्ली से 475 किलोमीटर दूर और दो किलोमीटर की ट्रैकिंग कर यहां पहुंचा जा सकता है। पांडवों को क्षमादान दने से बचने के लिए जब भगवान शिव बैल का रूप धर भूमिगत हो गए थे तो उनके शरीर के

'यहां पहुंचने के लिए घने जंगलों और मैदान से गुजरना पड़ता है। यहां बेहद ही पुराना कलपेश्वर वृक्ष है। कहा जाता है कि इस वृक्ष से जो भी मुराद मांगो वह पूरी होती है। समुद्र तल से 2,134 मीटर की ऊंचाई पर कलपेश्वर चमोली के अरगम जिले में है। हेलांग से 11 किलोमीटर दूर इस जगह पर यहां से ट्रैकिंग कर पहुंचा जा सकता है। दिल्ली से 475 किलोमीटर दूर और दो किलोमीटर की ट्रैकिंग कर यहां पहुंचा जा सकता है।'

कई अंग जमीन के ऊपर ही रह गए थे। कलपेश्वर में भी उनके एक भाग की पूजा होती है। कलपेश्वर में और भी कई जगह घूमा जा सकता है। इसके आसपास कई ऐसी जगह हैं, जो बेहतरीन पर्यटक स्थल है। रुद्रप्रयाग मंदिर- भगवान शिव का पंचकेदार में एक मंदिर यह भी है। यहां भगवान शिव को उनके मोहक चेहरे के रूप में पूजा जाता है। 2286 मीटर की ऊंचाई पर स्थित रुद्रनाथ मंदिर में सग्गार से 21 किलोमीटर की ट्रैकिंग कर यहाँ पहुंचा जा सकता है। वैसे यह गांव कलपेश्वर से बस दस किलोमीटर की दूरी पर है। जोशीमठ- यह बहुत ही छोटा तीर्थस्थल है मगर चमोली जिले का सबसे महत्वपूर्ण स्थल है।

यहां पर आदि शंकराचार्य की बनाई चार मुख्य संस्थाएं हैं। साथ ही यह भगवान बद्रीनाथ की प्रतिमाएं भी देखी जा सकती हैं। ठंड के दिनों में तो ये संस्थाएं भगवान का घर बन जाती हैं। चोपता- चोपता को मिनी स्विट्जरलैंड भी कहा जाता है। कलपेश्वर से 23 किलोमीटर दूर यह जगह किसी स्वर्ग से कम नहीं। साल भर यहां पर्यटकों का तांता लगा रहता है। साहसिक खेलों के शौकीनों के लिए यह पसंदीदा जगह है। सर्दियों के दौरान यहां की प्राकृतिक सुंदरता देखने बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

नजदीकी हवाई अड्डा जॉली ग्रांट एयरपोर्ट है जो कलपेश्वर से 267 किलोमीटर की दूरी पर है जबकि नजदीकी रेलवे स्टेशन ऋषिकेश जोशीमठ से 251 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां आने के लिए सड़क यातायात का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। कलपेश्वर पूरे साल में कभी भी जाया जा सकता है।

पर्यटकों के लिए खुले चौरासी कुटी के द्वार

तीर्थनगरी की ख्याति को देश-विदेश में पहुंचाने वाली महर्षि महेश योगी की तपस्थली शंकराचार्य नगर (84 कुटी) के द्वार अब पर्यटकों के लिए खुल गए हैं। भावतीत ध्यान योग के लिए विख्यात व मशहूर पॉप म्यूजिकल ग्रुप बीटल्स की यादों से जुड़ी इस धरोहर को अब पर्यटक करीब से महसूस कर यहां नेचर ट्रेल का आनंद ले सकेंगे। मंगलवार को प्रदेश के वन मंत्री दिनेश अग्रवाल परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि महाराज ने चौरासी कुटी आश्रम में नेचर ट्रेल का विधिवत लोकार्पण किया ऋषिकेश शहर से लगभग सात किलोमीटर दूर चौरासी कुटी में गुंबद व गुफानुमा चौरासी कुटिया बनी हैं। जो

वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। अस्सी के दशक में राजाजी पार्क के अस्तित्व में आने से पहले तक चौरासी कुटी पर्यटकों से गुलजार रहती थी, लेकिन उसके बाद आश्रम ही बंद कर दिया गया था। साथ ही पर्यटकों के यहां जाने पर पाबंदी लगा दी गई थी। अब इसे पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है। देश व विदेश के पर्यटक निर्धारित शुल्क अदा कर इस धरोहर को करीब से देख सकेंगे। लोकार्पण के अवसर पर वन मंत्री दिनेश अग्रवाल ने कहा कि प्रकृति तथा वन संपदा प्रदेश की रीढ़ है। हमें इसे संरक्षित रखते हुए पर्यटन को बढ़वा देना है। उन्होंने कहा कि चौरासी कुटी का पर्यटकों के लिए खोला जाना एक बड़ा कदम है और हम इस धरोहर को और संरक्षित कर यहां से योग व अध्यात्म का संदेश देश-विदेश तक पहुंचाने में सफल होंगे। देश विदेश के पर्यटकों व योग जिज्ञासुओं के लिए यह स्थल एक नई पहचान बनेगा। परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि महाराज ने कहा कि महर्षि महेश योगी ने ही

देश-विदेश में तीर्थनगरी की ख्याति को पहुंचाने का काम किया है। उन्होंने इस स्थान को हेरिटेज के रूप में संरक्षित कर इसे और खूबसूरत रूप देने की सलाह दी। इस अवसर पर विधायक विजय बड़थ्वाल, मुख्य वन। मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक डीवीएस खाती, राजाजी टाइगर रिजर्व की निदेशक नीना ग्रेवाल, भागीरथी वृत के वन संरक्षण एसपी सुबुद्धि भी इस अवसर पर मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन वन्य जीव प्रतिपालक

एक हिल स्टेशन है मोरी

कभी गए हैं आप?

दिल्ली से 410 किलोमीटर की दूरी पर भीड़भाड़ से दूर हिल स्टेशन है- मोरी। उत्तर-पश्चिम गढ़वाल क्षेत्र स्थित मोरी उत्तरकाशी जिले के बेहतरीन हिल स्टेशनों में से एक है। मोरी हिल अपने आप में खूबूसरती के लिए मशहूर है। यहां की सुंदरता और मनोहारी दृश्य इस हिल स्टेशन का बढ़ा देते हैं। यहां का शांत वातावरण, स्वच्छ हवा और मौसम इसे बेहतरीन हिल स्टेशनों में से एक बनाते हैं। पेड़ों से लदे पहाड़। हरे-भरे धान के खेत, कल-कल बहती टान्स नदी, बेहतरीन वॉटरफॉल, झीलें और देवदार के पेड़ मोरी को और भी मनोहारी बनाते हैं। एशिया का सबसे लंबा देवदार का जंगल मोरी में ही है। मोरी न सिर्फ प्राकृतिक संपदा का धन है बल्कि प्राचीन मंदिरों और बेहतरीन वास्तुशिल्प से भी समृद्ध है। समुद्रतल से 1150 मीटर ऊपर टॉन्स नदी के किनारे है मोरी। यहां बहने वाली टॉन्स यमुना की सहायक नदियों में से एक है। टॉन्स घाटी के लोग यह दावा करते हैं कि वे पांडवों और कौरवों के पूर्वज थे। वे आज भी उन दिनों की संस्कृति, बहु विवाह को मानते हैं। यहां के टॉन्स नदी में रिवर राफ्टिंग का आनंद लिया जा सकता है। यहां पर कैम्पिंग भी की जा सकती है। इसके लिए यहां सारा सामान उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा हाइकिंग, ट्रेकिंग, नेचर वॉक का आनंद किया जा सकता है। चिड़ियों की चहचहाहट, वनस्पति और जीव-जंतु पर्यटकों को चौका देते हैं। रॉक क्लाइबिंग भी मोरी के मशहूर खेलों में शामिल है।

मोरी में देखने लायक बहुत कुछ है जैसे-

इच्छारी बांध- यह बांध मोरी के मुख्य आकर्षण में से एक है। यह बांध टॉन्स नदी पर बना है। किवदंती के अनुसार ऐसा माना जाता है कि यह नदी राक्षसी सूर्पनखा के आंसुओं से उत्पन्न हुई थी।

दुर्योधन मंदिर- यह मंदिर पांडवों का बनाया है। लकड़ियों से बना मंदिर बेहतरीन कलाकृति का उदाहरण है। यह मंदिर कौरवों के सबसे बड़े भाई दुर्योधन को समर्पित है।

लुनागढ़ क्रीक- यह एक खूबसूरत पैलेस में से एक है। मोरी से 30 मिनट पैदल का रास्ता तय कर इस पैलेस तक पहुंचा जा सकता है। इसमें छोटा सा तालाब और वाटरफॉल भी देखा जा सकता है। यह एशिया के सबसे बड़े देवदार के जंगलों से घिरा है। इसमें बच्चों और बड़ों दोनों के लिए प्रकृति से जुड़े विभिन्न एडवेंचर हैं।

नेटवार- मोरी से ग्यारह किलोमीटर दूर आयाताकार लकड़ी का बना एक मंदिर दुर्योधन के मित्र कर्ण को समर्पित है।

जैखोल- मोरी से 20 किलोमीटर की दूरी पर टॉन्स घाटी के ऊपर है जैखोल गांव। यह छोटा सा गांव देवदार जंगलों के बीच है।

मोरी जाने के लिए मसूरी से बस या टैक्सी ली जा सकती है। मसूरी से मोरी सिर्फ 139 किलोमीटर है।

नजदीकी हवाई अड्डा जॉली ग्रांट देहरादून है, जो 170 किलोमीटर दूर है।

नजदीकी रेलवे स्टेशन देहरादून है जो 178 किलोमीटर की दूरी पर है।

यहां जाने का सबसे अच्छा समय अप्रैल से जून तक है। ठंड में यहां का तापमान दो डिग्री तक हो जाता है।

रंगीलो राजस्थान का दिल जोधपुर

शानदार महलों, दुर्ग और मंदिरों के लिए विख्यात रंगीलो राजस्थान के दूसरे बड़े शहर जोधपुर की बात ही निराली है। पूरे शहर में बिखरे वैभवशाली महल, जो न सिर्फ यहां के ऐतिहासिक गौरव को जीवंत करते हैं, बल्कि यहां की हस्तकलाएं, लोक-नृत्य, पहनावे और संगीत शहर की समां को रंगीनियत से भर देते हैं...

जोधपुर के आसपास

जोधपुर से करीब 25 किमी. की दूरी पर गुडा बिश्नोई गांव वाइल्डलाइफ और प्रकृति की सुंदर छटा निहारने के लिए बेहतरीन स्थान है। ओसियन जोधपुर से लगभग 65 किमी.की दूरी पर स्थित एक प्राचीन शहर है। यह जैन शैली के मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहां ऊंट की सवारी कर सकते हैं। इसके अलावा, मछिया सफारी पार्क, कायलाना लेक भी दर्शनीय स्थल हैं। पाली में सोमनाथ और नौलखा मंदिर शिल्पकला के लिए मशहूर हैं। उर्स के दौरान मीर मस्तान की दरगाह मुख्य आकर्षण होता है। जोधपुर शहर फोर्ट, पैलेस और मंदिरों के लिए दुनियाभर में मशहूर है, लेकिन एडवेंचर स्पोर्ट्स और खाने-पीने के शौकीनों को भी यह शहर खूब आकर्षित करने लगा है। रंग-बिरंगे परिधान में सजे लोग और उनकी मनमोहक लोक-नृत्य व संगीत इस शहर की समां में चार-चांद लगा देते हैं। यह राजस्थान के बीचोंबीच स्थित है, इसलिए इसे राजस्थान का दिल भी कहा जाता है। राठौड़ वंश के प्रमुख राव जोधा ने इस शहर की स्थापना वर्ष 1459 में की थी। उन्हीं के नाम पर इस शहर का नाम जोधपुर है। यह शहर सन सिटी और ब्लू सिटी के नाम से भी मशहूर है। इसे सन सिटी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यहां की धूप काफी चमकीली होती है। वहीं, मेहरानगढ़ किला

जोधपुर जाने वाले पर्यटकों में उमेद भवन पैलेस के प्रति एक खास आकर्षण होता है। महाराजा उमेद सिंह (1929-1942) ने इसे बनवाया था। दरअसल, यह दुनिया के सबसे बड़े प्राइवेट रेजिडेंस में से एक है। इसमें तकरीबन 347 कमरे हैं। महल की खासियत है कि इसे बलुआ पत्थरों से जोड़ कर बनाया गया था। इस बेजोड़ महल के वास्तुकार हेनरी वॉन थे। महल का एक हिस्सा हेरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है, जबकि बाकी हिस्से को म्यूजियम का रूप दे दिया गया है, जिसमें राजघराने से जुड़ी वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है।

मेहरानगढ़ किला

जोधपुर जाएं, तो मेहरानगढ़ फोर्ट देखना न भूलें। करीब 150 मीटर ऊंचे टीले पर बना यह किला भारत के सबसे बड़े फोर्ट में से एक है। यहां से जोधपुर शहर का शानदार नजारा दिखाई देता है। इसका निर्माण राव जोधा ने 1459 में करवाया था। यहां पहुंचने के लिए घुमावदार रास्तों और पथरीले टीलों से होकर गुजरना होगा, लेकिन फोर्ट पहुंचने के बाद इसकी भव्यता देखते ही बनती है। इस किले में कई पोल यानी प्रवेशद्वार हैं, जिनमें जयपोल,

फतहपोल और लोहपोल प्रमुख हैं। किले में स्थित महलों को देखने के बाद आपको मेहरानगढ़ की भव्यता का एहसास होगा। उस दौर की राजशाही वस्तुओं व धरोहर भी यहां देखे जा सकते हैं। किले की प्राचीर पर आज भी तोपें रखी हैं।

जसवंत थडा

मेहरानगढ़ किले से कुछ ही दूरी पर जसवंत थडा बेहद खूबसूरत स्मारक है। पहाड़ों से घिरे सफेद संगमरमर की बनी इस स्मारक की नक्काशी देखते ही बनती है। इसके पास ही एक झील है, जो चांदनी रात में स्मारक की खूबसूरती में चार चांद लगा देती है। यह जोधपुर राजपरिवार के राठौड़ राजा-महाराजाओं का समाधि स्थल भी है।

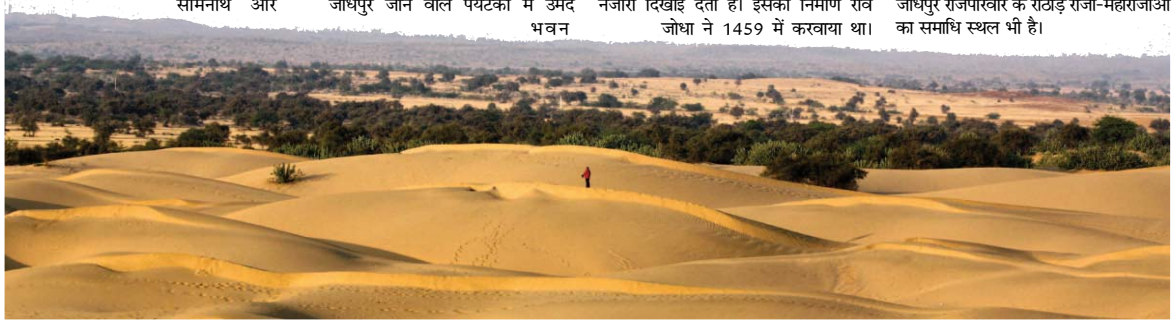

यहां घुमने जाना किसी ख्वाब से रू-ब-रू होने सरीखा है

आसमान की छंटती कालिमा कब उजली नीलिमा में बदल जाती है, पता ही नहीं लगता...बस महसूस होता है कि कुछ क्षण पहले ही तो आकाश का रंग कुछ और था अब कुछ और...लेकिन लंढोर में कुछ और भी होता है...सुबह जब यहां अंगड़ाई लेती है...तब वादियों से उठता कुहासा उसे आगोश में भरने लगता है...तब यह इलाका हौले-हौले उठते कुहासे, हरियाली और लाल छतों के बीच ध्यान योग में डूबा सा लगता है। यहां आना किसी ख्वाब से रू-ब-रू होने सरीखा है। रूह के रूहानी अहसासों से घुल-मिल जाने की तरह। सूरी के पास एक छोटी-सी जगह है। नाम है लंढोर। मसूरी के ग्लैमर और कोलाहल वाले मॉल रोड से कोई चार-पांच किलोमीटर दूर। शांत। शुद्ध हवा, ऊंचे पहाड़ों की कतारें, वादियां। देवदार के हजारों वृक्षों का सम्मोहित कर देने वाला संसार। कहा जाता है जब अंग्रेज यहां आए तो मोहित हो गए। उन्होंने इस शांत स्वर्ग में कॉटेज बनाए, एस्टेट खड़े किए। यहीं के होकर रह गए। बाद में लंढोर साहित्यकारों, कवियों और दार्शनिकों की पसंदीदा स्थली बना। यहां की फिजाओं में अब भी अलग ही बात है, अलग ही संगीत। बेहद मौलिक है, बेहद प्योर। लंढोर अगर अब भी उतना ही हसीन और अलौकिक बना हुआ है, तो शायद इसीलिए, क्योंकि यहां प्रकृति से कोई छेड़छाड़ नहीं हुई। यहां चुनिंदा लोग रहते हैं। रहने की शर्त यही है कि प्रकृति से कोई छेडखानी नहीं। जो कुछ जैसा है, वह वैसा ही रहेगा। उन्हें इसी के बीच एडजस्ट होना है।

कुछ अलग है लंढोर

जब क्वीन ऑफ हिल्स की बात होती है, तो उसका मतलब मसूरी के साथ उसकी पड़ोसी बहन लंढोर से भी होता है। जैसे-जैसे आप इसके सीमेंटनुमा संकरे घुमावदार रास्तों से ऊपर की ओर बढ़ेंगे, यह इलाका अपने सुहानेपन की परतें खोलने लगेगा। देवदार, हिमालयन ओक, चीड़ पाइन, ब्लू पाइन और तमाम पहाड़ी पेड़-पौधों के बीच फूलों की छटा मिलेगी। पक्षियों का एंबियंस होगा। यह जगह अपने आपमें एक जीती-जागती बर्ड सैंक्चुअरी भी है। यहां दिनों-दिन पक्षियों की प्रजातियां बढ़ रही हैं। कुछ नए मेहमान पक्षी भी आना-जाना बढ़ा रहे हैं। मोटे तौर पर यहां 350 पक्षियों की प्रजातियां तो हमेशा मिल जाएंगी। बरसात की हल्की फुहारों के बीच यहां पहुंचेंगे, तो ऊंचाई पर धुंध के बीच फुहारें टप-टप करती हुई मिलेंगी। यहां सबसे ऊंचाई पर पहुंचने के बाद सामने दिखने लगेंगी हिमालय रेंज की प्रसिद्ध चोटियां। जाड़ों के मौके पर ये चोटियां बर्फ की सफेद चादर ओढ़े होती हैं और सूरज की किरणें पड़ते ही चांदी-सी दमकती हैं। नीचे हरियाली से भरी वादियां और ऊंचे देवदार वृक्ष। यह इलाका तिब्बत का करीबी पड़ोसी भी कहा जाता है। कहीं भी जाइए। चारों ओर नजर दौड़ाइए तो हर पल एक अलग खुशनुमा कैनवस दिखेगा। पास से लेकर दूर तक।

अंग्रेजों ने बसाया था

अंग्रेजी सेना का अफसर कैप्टेन यंग 19वीं सदी के शुरू में यहां पहुंचा।

यहां सबसे पहला पक्का घर भी कैप्टन यंग का ही बना था। फिर यहां सेना की छावनी बनी। इस छोटे, खूबसूरत और शांत कस्बे को 1827 में ब्रिटिश आर्मी ने बसाया। दक्षिण- पश्चिम वेल्स के चारमोरथेनशायर के एक गांव लैंडवोरर के नाम पर इस जगह को नाम मिला लंढोर। यह मसूरी से करीब 300 मीटर और ऊपर है।

हावडा एक्सप्रेस का जिला चुनाव अधिकारी डा. धवल पटेल द्वारा भव्य स्वागत किया गया

जिला कलेक्टर एवं जिला चुनाव अधिकारी ने झंडी दिखाकर श्रृंगारित हावड़ा एक्सप्रेस को प्रस्थान कराया

सूरत। बुधवार को लोकसभा की सामान्य चुनावी प्रक्रिया में मतदाताओं को अधिकाधिक अपने मतदान को प्राथम्किता दे इसी उद्देश्य से केन्द्रीय चुनाव आयोग द्वारा श्रृंगारित हावड़ा एक्सप्रेस गाड़ी मतदाता जागृति के अपने कार्यक्रम के तहत सुबह 9.12 बजे मिनट पर सूरत रेल्वे स्टेशन पर आ पुहंची थी जिसका चुनाव अधिकारी एवं कलेक्टर डा. धवल पटेल ने भव्य स्वागत कर झंडी दिखाकर अग्रिम यात्रा के लिए प्रस्थान कराया। हावड़ा एक्स्पेस को हावड़ा से गुजारत तक 6 राज्यों से गुजरने वाले ट्रेन द्वारा मतदान जागृति के स्लोगन लिखे श्रृंगारित ट्रेन ने अपने लोकशाही के इस पर्व पर अपने लक्ष्य को पूर्ण किया है।

इस अवसर पर कालेज एन.एस.एस के विद्यार्थियों सुमन हाई स्कूल, कासानगर कुमार गुरुकुल के विद्यार्थी भारी संख्या में जुड़े, प्ले कार्ड एं बेनरों द्वारा मतदाता जागृति का संदेश फैलाया मतदाता जागृति के लिए ई.वी.एम. मशीन वी.वी.पेट द्वारा मोकपोल कार्यक्रम द्वारा रेल्वे स्टेशन पर यात्रियों को मतदान के लिए जागृत किया।

गणेश नगर में हत्या एवं लूट के फरार आरोपी को आज पान्डेसरा पुलिस के किया गिरफ्तार

सूरत। बुधवार को पान्डेसरा पुलिस क्षेत्र के गणेश नगर विस्तार में बस स्टैंड से वडोदग जाने वाले अंधेरे रास्ते में ता. 6 फरवरी 2019 में उमेश महेन्द्र राय उम्र 27वर्ष निवासी प्लाट नं. 1 घनश्याम नगर बडोद गाम में रात के आठ बजे के आस पास बस से उतर कर पैदल चलते हुए घर जा रहा था उसी समय दो अज्ञात युवकों ने मोटर साइकल पर आकर लूट की कोशिश में चालू मारकर हत्या कर हत्यारे भाग निकले थे। उपरोक्त संदर्भ में पान्डेसरा पुलिस ने गु र. नं. 20/2019 आई.पी.सी. की धारा 307,302,393,398,114 तथा जी. पी क्ट 135 (ए) के तहत मामला दर्ज जांच शुरु कर दी थी। उपरोक्त अपराध के आरोपी अकाश सिंह उर्फ अमर सिंह अजीत सिंह सूयवंशी उम्र 22 वर्ष निवासी ए 55 सुखीनगर राज सिनेमा के पास पत्रकार कालोनी पान्डेसरा सूरत तथा मूल निवासी गाम नवीबाजार कोमरे थाना छावनी जिला फैजाबाद (30प्र.) को 16/2/2019 में लगभग 3.00 बजे दोपहर गिरफ्तार किया था जिसकी पूछताछ में अन्य सह आरोपी प्रकाश उर्फ मार्को, उर्फ पंकज यादव निवासी पान्डेसरा सूरत का नाम आया जो आरोपी अभी तक फरार बताया जाता था।

उपरोक्त अपराध के फरार आरोपी को पकड़ने हेतु पलिस कमिश्नर सूरत सहित अन्य उच्चाधिकारी के आयोजन व मार्गदर्शन के तहत पु.इं.के.बी. झाला की सूचना पर पु.स.इं.एन.जे पांचाल तथा ए.एस.आई. ईश्वर सिंह चन्दन सिंह व आ.हे.का. लालाभाई लक्षमण भाई, रोहित भाई कमाभाई तथा संजय भाई प्रभुदास भाई आदि टीम वर्क पर बाहर थे कि अ. हे. का. लालाभाई लक्ष्मण भाई व राजू भाई रघुनाथ भाई को गुप्त एवं विश्वस्त सूचना मिली की पान्डेसरा गणेशनगर बस स्टैड से बडोद गाम के अंधेरे रास्ते में ल ूट एवं हत्या से सम्बद्ध फरार आरोपी प्रकाश उर्फ पंकज यादव पान्डेसरा गु. हा. बोर्ड पानी की टंकी के पास खड़ा है।

सूरत। सूरत रेल्वे स्टेशन पर इन्टरसिटी ट्रेन के कोच कम होने से पास होल्डरों ने ट्रेन रोककर अपना विरोध प्रदर्शन इस प्रकार किया।

गुजरात कांग्रेस को बड़ा झटका, अल्पेश ठाकोर ने दिया इस्तीफा

गांधीनगर। गुजरात में कांग्रेस का हाथ झटकते हुए अल्पेश ठाकोर ने इस्तीफा दे दिया है। चर्चा है कि वो भाजपा का दामन थाम सकते हैं। कांग्रेस विधायक अल्पेश ठाकोर द्वारा गठित एक संगठन गुजरात क्षत्रीय ठाकोर सेना ने कांग्रेस से अपने इस्तीफे की मांग की है। फ़िलहाल मिल रही जानकारी के अनुसार अल्पेश ठाकोर ने अपना इस्तीफा अमित चावड़ा को भेज दिया है। वह पाटन लोकसभा सीट से चुनाव लड़ना चाहते थे लेकिन कांग्रेस ने उनके बजाय पूर्व सांसद जगदीश ठाकोर को तवज्जो दी।

पार्टी ने साबरकांठा लोकसभा सीट से संगठन के एक सदस्य को टिकट देने की ठाकोर सेना की मांग को भी नजरअंदाज कर दिया। संगठन के एक सदस्य जगत ठाकोर ने यहां संवाददाताओं से कहा, मंगलवार देर रात यहां कोर समिति की बैठक के दौरान ठाकोर सेना ने कांग्रेस से नाता तोड़ने का प्रस्ताव पारित किया। निर्णय लेने से पहले हमने अल्पेश ठाकोर से सलाह-मशविरा नहीं किया। उन्होंने कहा, बैठक के बाद हमने उनसे 24 घंटे के भीतर अपना रूख स्पष्ट करने को कहा है। अगर वह अभी भी कांग्रेस में रहना चाहते हैं तो उन्हें ठाकोर सेना छोड़नी होगी। और अगर वह हमारे साथ रहना चाहते हैं तो उन्हें पार्टी और विधायक पद से इस्तीफा देना होगा।

कांग्रेस का सरदार और मोरारजी के बाद मुझे हटाने का प्रयास:पीएम मोदी

तापी। तापी के सोनगढ़ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कड़े प्रहार किए और कहा कि गुजरात के सरदार पटेल और मोरारजी देसाई को हटाने के बाद अब मुझे हटाने का प्रयास किया जा रहा है। सौराष्ट्र के जूनागढ़ में जनसभा को संबोधित करने के बाद पीएम मोदी दक्षिण गुजरात के सोनगढ़ पहुंचे। जहां रैली में कहा कि 23 मई 2019 को लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद फिर एक बार भाजपा की सरकार बनेगी। उन्होंने कहाकि पडौसी मुल्क का आतंकवाद निर्यात करना ही एक मात्र धंधा है। कांग्रेस के चुनावी घोषणा पत्र को सरदार पटेल के विचारों से विपरीत बताया और कहा कि देश के टुकड़े करनेवाले राष्ट्रद्रोही होते हैं। लेकिन कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में राष्ट्रद्रोह कानून कत्म करने का वादा किया है। जबकि सरदार पटेल एक भारत श्रेष्ठ भारत के लिए समर्पित थे और वह समस्या का समाधान कर सकते थे, आज भाजपा सरकार उन्हीं के रास्ते चलने का प्रयास कर रहे हैं। मोदी ने कहा कि कांग्रेस और परिवार सरदार पटेल को बर्दाश्त नहीं करते थे। बाद में मोरारजी देसाई से उन्हें आपत्ति हुई। अब गुजरात मुझे चुनकर भेजा है, जिससे कांग्रेस की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। मन से खुद को राजा-महाराजा मानने वाले लोग एक चाय वाले को कैसे स्वीकार कर सकते हैं। प्रधानमंत्र ने कहा कि एक जमाना था जब आतंकी हमलों के बाद सरकार हाथ पर हाथ कर बैठी रहती थी। लेकिन मौजूदा सरकार ने आतंकी घटनाओं के खिलाफ स ती से कार्यवाही की है। गुजरात को जिस प्रकार शांति से जीना सिखाया है, उसी प्रकार देश में भी करना जरूरी है। समूचे देश में शांति और सदभावना का माहौल बनाने के लिए आतंकवाद के जड़मूल से सफाया करना आवश्यक है। आतंकवाद को पड़ौसी मुल्क में पाला-पोषा जाता है और उसका उपयोग भारत में किया जाता है। लेकिन हमने घर में घुसकर आतंकवाद को नेस्तनाबूद करने का प्रयास किया, जो देश के कुछ लोगों से बर्दाश्त नहीं हो रहा। पीएम मोदी ने भ्रष्टाचार को देश के लिए कैंसर बताया और कहा कि दिल्ली में जाकर ऐसा काम किया है, जिससे जनता को लूटने वालों को रुपया वापस करना होगा। एक कांग्रेस चौकीदार को चोर कह रही है, दूसरी ओर मध्य प्रदेश में उसी के पास से बोरे भर भरकर रुपए निकल रहे हैं। अब मुझे पता चला कि कांग्रेस को आखिर नोटबंदी से इतनी तकलीफ क्यों हो रही है? क्योंकि घपले-घोटाले कर रुपए जमा करने की कांग्रेस की आदत बन चुकी है। मध्य प्रदेश में कांग्रेस सरकार बने ज्यादा समय नहीं हुआ है और 280 करोड़ रुपए बरामद हुए हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि दक्षिण गुजरात के उमरगाम से उत्तरी गुजरात के अंबाजी तक आदिवासी पट्टी में एक भी विज्ञान संकाय की स्कूल

चेकपोस्ट से दो बइकों पर जा रहे तीन लोगो से पुलिस ने १५ लाख के पुराने नोट किए बरादम

अहमदाबाद। नोटबंदी को ढाई वर्ष से ज्यादा समय होने के बाद अभी भी बजार में पुराने नोटों की अदला-बदली का मामला सामने आया है। जिले की सोजित्रा तहसील की पलोल चेकपोस्ट से दो बइकों पर जा रहे तीन लोगो से पुलिस ने 14 लाख 87 हजार रुपये के पुराने नोट बरादम किए हैं, जिसनें 500 की दर के 1396 व एक हजार की दर के 789 नोट शामिल है।

पुलिस के अनुसार पुराने नोटों के साथ पकड़े गए तीन जनों में रुपाभाई भरवाड़, रफीकशा दीवान एवं सलीमुद्दीन शेख शामिल है। रुपाभाई तारापुर तहसील के खाखसर का रहनेवाला है। जबकि रफीकशा व समीमुद्दीन खंभात में रहते है।

मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर सोजित्रा पुलिस की टीम मंगलवार को पलोल चेक पोस्ट के निकट निगरानी में थी। इस दौरान वहां से गुजर रहे दो बाइकों पर वसार तीन जनों को रोककर तलाशी ली, जिसमें उनके पास मिले प्लास्टिक के बैग में पुराने नोट मिले। इस संबंध में आयकर विभाग को जानकारी दी गई है।

मिनी बस को टैंकर ने मारी टक्कर, पांच महिला समेत छह लोगों की मौत

नवसारी। जिले के धोलापीपला के निकट पंचर हुई एक मिनी बस को टैंकर ने टक्कर मार दी। इस हादसे में पांच महिलाओं समेत छह लोगों की मौत हो गई। जबकि पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जानकारी के अनुसार सूरत के वेसूगाम की नंदिनी सोसायटी 3 के निवासी चैत्र नौरात्रि के चलते महाराष्ट्र के दहाणू स्थित महालक्ष्मीजी और वलसाड जिले के राबडा गांव स्थित विश्वंभरी माता के दर्शन करने गए थे। दर्शन के बाद ये लोग मिनी बस में सूरत की ओर लौट रहे थे। रास्ते में मिनी बस में पंचर होने से ड्राइवर अपनी गाड़ी साइड में लगाकर टायर बदल रहा था। उस वक्त तेज र तार में आए ट्रक ने मिनी बस को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबर्दस्त थी कि बस के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार तीन लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

महाराष्ट्र और उत्तर गुजरात के लिए चलाई जाएंगी 20 अतिरिक्त बसें

सूरत। जीएसआरटीसी के सूरत एसटी मंडल की ओर से इस गर्मी की छुट्टी में 20 अतिरिक्त बसों का परिचालन किया जाएगा जो गुजरता समेत महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों के लिए चलाई जाएगी। इससे यात्रियों की ट्रेनों पर निर्भरता घटेगी और उन्हें बस का भी विकल्प मिल सकेगा। इन बसों का परिचालन 15 अप्रैल से किया जा सकता है। इसके लिए महाराष्ट्र एसटी मंडल को एनओसी पत्र भेजा गया है जिस पर मंजूरी मिलने के बाद सूरत एसटी मंडल इन बसों का परिचालन शुरू करेगी।

सूरत एसटी मंडल के अनुसार इस बार नवापुर, सोनगढ़, उच्छल, धुलिया, नासिक, त्र्यंबकेश्वर, मनमाड के लिए बसें चलाई जाएंगी।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100, E-mail: krantisamay@gmail.com (subject to surat jurisdiction)**